भारत छोड़ो आन्दोलन : परिस्थितियाँ एवं महत्त्व

अवकाश कुमार

विजय कुमार

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में महात्मा गाँधी के सत्याग्रह का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। गाँधीजी ने राष्ट्रीय आन्दोलन की नब्ज पहचानी और निष्कर्ष निकाला कि भारत को मुक्ति दिलाने का एकमात्र रास्ता सत्य तथा अहिंसा पर आधारित सत्याग्रह ही हो सकता है। गाँधीजी का विश्वास था कि हिंसा से प्राप्त हुई आजादी थोड़े दिनों के लिए तो हो सकती है किन्तु वह स्थायी नहीं हो सकती, दूसरी ओर अहिंसा से प्राप्त की गई आजादी स्थायी और शांति कायम करने में सक्षम होगी। राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान गाँधीजी की कटु आलोचना भी की गई, किन्तु इससे गाँधीजी पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। वे अपने लक्ष्य पर डटे रहे और अंततः लक्ष्य प्राप्त करके ही रहे। गाँधीजी के व्यक्तित्व में इतनी आकर्षण क्षमता थी कि सहज ही जनता उनकी ओर आकर्षित हो जाती थी। यहाँ तक कि गाँधीजी के आलोचक भी उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर गाँधीजी की बात मानने पर मजबूर हो जाते थे। गाँधीजी ने राष्ट्रीय आन्दोलन को जन आन्दोलन बनाया और अपने आन्दोलन में सभी वर्गों को शामिल किया। यहाँ तक कि गाँधीजी के सत्याग्रह में महिलाओं ने भी बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया जिसके परिणास्वरूप देश आजाद हुआ। गाँधीजी के महत्त्वपूर्ण योगदान के कारण ही, राष्ट्र ने उन्हें 'राष्ट्रपिता' की संज्ञा से विभूषित किया।